गौहर रजा की नज़्म

'जब साज़िश, हादसा कहलाए...'
जब साज़िश, हादसा कहलाए और साज़िश करने वालों को
गद्दी पे बिठाया जाने लगे जम्हूर का हर एक नक़्श-ए-क़दम
ठोकर से मिटाया जाने लगे
जब खून से लथपथ हाथों में इस देश का परचम आ जाए
और आग लगाने वालों को फूलों से नवाज़ा जाने लगे
जब कमज़ोरों के जिस्मों पर नफ़रत की सियासत रक़्स करे
जब इज़्ज़त लूटने वालों पर खुद राज सिंहासन फख़्र करे
जब जेल में बैठे क़ातिल को हर एक सहूलत हासिल हो
और हर बाईज़्ज़त शहरी को सूली पे चढ़ाया जाने लगे
जब नफ़रत भीड़ के भेस में हो और भीड़, हर एक चौराहे पर
क़ानून को अपने हाथ में ले जब मुंसिफ़ सहमे, सहमे हों
और माँगे भीख हिफ़ाज़त की ऐवान-ए-सियासत में पहम
जब धर्म के नारे उठने लगे जब मंदिर, मस्जिद, गिरजा में
हर एक पहचान सिमट जाए जब लूटने वाले चैन से हों
और बस्ती, बस्ती भूख उगे
जब काम तो ढूँढें हाथ, मगर कुछ हाथ ना आए, हाथों के
और ख़ाली, ख़ाली हाथों को शमशीर थमाई जाने लगे
तब समझो हर एक घटना का आपस में गहरा रिश्ता है
यह धर्म के नाम पे साज़िश है और साज़िश बेहद गहरी है
तब समझो, मज़हब-ओ-धर्म नहीं तहज़ीब लगी है दांव पर
रंगों से भरे इस गुलशन की तक़दीर लगी है दांव पर
उट्ठो के हिफ़ाज़त वाजिब है तहज़ीब के हर मयख़ाने की
उट्ठो के हिफ़ाज़त लाज़िम है हर जाम की, हर पैमाने की...

दिन 16 मई 2014 एक अभूतपूर्व दिन

सौरव कुमार

भयानक मेजोरिटी, हाहाकार मच गया था। अब आगे क्या?

देश उम्मीद लगा कर इस सरकार के तरफ देख रहा था , उनके जीवन में कुछ अच्छा परिवर्तन आएगा,

मीडिया गोदी नही बनी थी, सवाल होता रहता था।।

कभी उस वक्त का फुटेज शेयर करूंगा ।

कुछ भयानक भयानक लुभावने नाम वाली नीति की घोषणा हुई।

ऐसा लगने लगा पिछली सरकार ने ऐसा क्यों नही सोचा,

जब की सच्चाई ये थी ,सोची पिछली सरकार ने थी किया उन्होंने था बस प्रचार नही कर सकी।

FDI से मनरेगा से लेके जीएसटी तक को गाली दिया गया था।

लोगो ने हरेक तकलीफ झेल के हरेक नीति का समर्थन किया , ये सोच कर जो हो रहा है वो देश और आम लोग के भलाई के लिए हो रहा हैं ।

लोगो को भरोसा दिलाया गया ,2014 से पहले देश में पत्थर से घिस के आग लगाया जाता था और हम सब मान भी रहे थे ।

समय गुजरता गया अदानी 690 से नंबर 2 से नंबर 1 बन गया देश इसी रफ्तार से नीचे गिरता गया ।।

जनता बेसब्र हो रही थी,

फिर कुछ प्रतिशत जनता अब सवाल करने लगी ।

अब जब सवाल हुआ तो

प्रेस कांफ्रेंस तो हुआ नही आज तक ।

लेकिन रैली में एक तरफा जवाब दिया गया

पिछले 9 वर्षों का जवाब....

एक एक वीडियो मिल जायेगा

Q- अदानी की जांच क्यों नहीं करवाते?

A- मैं गरीब हूं..चाय बेचता था.. नेहरू जी अमीर थे।

मुझे रोज 2-3 किलो गाली मिलती है।जय बजरंगबली ।।

Q- हर साल 2 करोड़ रोजगार के वायदे का क्या हुआ?

A- मुझे 600 करोड़ मतदाताओं ने चुना है ,

ठंड ज्यादा नहीं है वह तो बुढ़ापे में सर्दी ज्यादा लगती है।

Q- राष्ट्रीय संसाधन 1-2 लोगों को ही क्यों बेचे जा रहे?जीडीपी बढ़ रही फिर इनकम कम क्यूं हो रहा है ।

A- मैंने आज प्लास्टिक की रीसाइकिल्ड की हुई जैकेट पहनी है। अलीगढ़ का अब्दुल ताले वाला मेरा दोस्त था।

सब देशद्रोही हो ।

Q- महंगाई से निपटने की क्या कार्य योजना हैं?आम लोगो का दम फूल रहा हैं ।

A-मुझे आम चूसकर खाना पसंद है। मैंने बचपन में मगरमच्छ पकड़ा था। अबकी बार ट्रंप सरकार।

क्त- चीनी घुसपैठ पर सरकार चुप क्यों हैं?

A-मैं अपने बगीचे में मोर को दाना खिलाता हूं। उनके पांव के नीचे जमीं नहीं है। जो विकास हुआ 2014 के बाद हुआ है।

अनवरत...

मैं ..मैं... नेहरू.. नेहरू.. मैं मैं ...मैंने .. नेहरू.. मैं.. मैं ....हिंदू खतरे में है, राहुल पप्पू हैं,मैं मैं ...मैंने .. कांग्रेस हिंदू विरोधी है ,

मैं मैं ...मैंने .

यही हो रहा है अभी तक, कल कुछ बदल जाए तो कह नही सकता ।।

मंदिरों पर एक दृष्टि

मुंशी प्रेमचंद (अप्रैल, 1934)

हिन्दू समाज के परम पवित्र तथा माननीय मन्दिरों की ओर दृष्टिपात करने से हृदय काँप उठता है। वहाँ की दशा दयनीय ही नहीं, चिन्ताजनक भी है। जहाँ भक्ति की, ज्ञान की, आत्म-साधन की तथा तपस्या की निर्मल धारा बहाकर लोगों के जीवन को सुन्दर और सुखकर बनाना चाहिए, वहाँ आज दुराचार, पापाचार, भ्रष्टता तथा दुष्कृत्यों का केन्द्र देखकर आत्मा रो उठती है। उन्हें देखकर एक ज़ोरदार प्रश्न उठता है, कि क्या यही मन्दिर हैं? क्या यही भगवान् का निवास है?

यह बात अब तक किसी से छिपी नहीं है कि इन मन्दिरों की आड़ में आज बड़े बड़े लज्जा-जनक कृत्य हो रहे हैं। पुजारियों का, महन्तों का और धर्म गुरुओं का जीवन भयानक विलासिता से भरा हुआ है। वे मन्दिरों की आड़ में जघन्य से जघन्य कर्म करते नहीं शर्माते। ईश्वर को गाना सुनाकर खुश रखने के लिए उन्हें वेश्याएँ चाहिए। इस बहाने वे अपनी राक्षसी कामना को पूर्ण करते और अपने जीवन को विलास-वासना और पतन के गहरे गढ़े में डाल देते हैं। तिस पर भी, हिन्दू समाज के लिए वे पूज्य हैं, माननीय हैं और देवता-तुल्य हैं, क्योंकि वे पुजारी हैं, महन्त हैं और धर्मगुरु हैं। प्रतिदिन अनेक भोली-भाली तथा धर्मभीरु युवतियाँ पुण्य कमाने के लिए मन्दिरों में पहुँचती हैं और वे उन ईश्वर के प्रतिनिधियों के द्वारा या उनके संकेत मात्र से गायब कर दी जाती हैं और उनकी काम-वासना की शिकार बन जाती हैं। हिन्दू समाज को यह सब कुछ मालूम है। प्रतिदिन उसकी आँखों के सामने ऐसे दृश्य आते रहते हैं, वह आँखों पर पट्टी बाँध कर, ज़बान पर ताला लगाकर चुप है, क्योंकि आखिर वे लोग धर्म के ठेकेदार हैं।

जहाँ इन पुजारियों तथा धर्मगुरुओं का जीवन सीधा-सादा, पवित्र और त्याग तपस्या से पूर्ण रहना चाहिए, वहाँ आज वे इन सब बातों के विपरीत %सद्गुणों के भण्डार बने हुए हैं। उनके विषय में क्या कहा जाय। दिखलाने के लिए तो वे बडे संयमी हैं, त्यागी हैं और तप तथा भक्ति के साक्षात् अवतार हैं, लेकिन अच्छी तरह देखने पर ही उनका असली रूप प्रकट होता है। उनमें ढोंग, छल और कपट कूट-कूट कर भरा हुआ है। यों कहना चाहिए कि उनका चरित्र अद्भुत है। मांस, मछली, शराब, गांजा, भंग, अफीम आदि चीजों के बिना उनका काम नहीं चल सकता।

अब देश के प्रति उनके व्यवहार पर भी दृष्टिपात कीजिए। वे खद्दर के कपड़ों को स्वप्न में भी देखना पाप समझते हैं। देशी मिलों का बढ़िया कपड़ा उनके कोमल शरीर को चुभता है, गड़ता है और उससे उनका शरीर छिल जाता है। उनके लिए तो खास मैंचेस्टर का बना हुआ, महीन से महीन मलमल चाहिए। देशी और विदेशी का उनके लिए एक बेवकूफी का प्रश्न है। उनको देशी से क्या मतलब, उन्हें देश से सरोकार? वे तो देश के धर्मगुरु हैं महन्त हैं, पुजारी हैं। इसलिए वे जन-समाज के लिए पूज्य हैं। उनकी बातों में उनके कार्यों में किसी को हस्तक्षेप करने का क्या अधिकार। उनके आनन्द में किसी को विघ्न डालने का, बाधा डालने का क्या हक? और जब देश में कोई अच्छी बात होती है, कुप्रथाओं के विरुद्ध आवाज उठायी जाती है, प्रचार किया जाता है, पुरानी और लज्जाजनक रूढ़ियों को मिटा डालने का प्रयत्न किया जाता है या कोई देश-हितकारी नियम या बिल पास होता है, तो ये धर्म के ठेकेदार, समय को न देखते हुए, अपने नीच स्वार्थ-साधन के लिए ऐसे कार्य के विरुद्ध अपनी पूरी ताकत लगा देते हैं। जनता द्वारा दिये हुए रुपयों को जनता के ही विरोधी कार्यों में व्यय करते हैं। रुपयों को पानी की तरह बहाकर वे ऐसे कार्यों के विरुद्ध आवाज उठाते हैं और देश-हित विरोधी प्रचार करने का प्रयत्न करते हैं। जनता का रुपया जनता के ही विरोध में खर्च करते उन्हें जरा भी संकोच नहीं होता। संसार के लिए उनका यह कार्य अनोखा है और कृतघ्नता का एक ज्वलन्त उदाहरण है, पर वे अपनी पूरी शक्ति लगाकर भी देश को सत्पथ पर जाने से नहीं रोक सकते, क्योंकि उनमें कोई बल नहीं है। शारीरिक, मानसिक, आत्मिक तथा नैतिक बल के भीषण अभाव ही ने उन्हें पतन के गहरे गर्त में गिरा दिया है। उनकी बुद्धि को अज्ञान के काले बादलों ने घेर रखा है, इसी कारण वे अपने अहित की बात हित की और हित की बात अहित की समझ रहे हैं। भला, गिरा हुआ नि:शक्त मनुष्य समय की शक्तिशाली लहर को कैसे रोक सकता है?
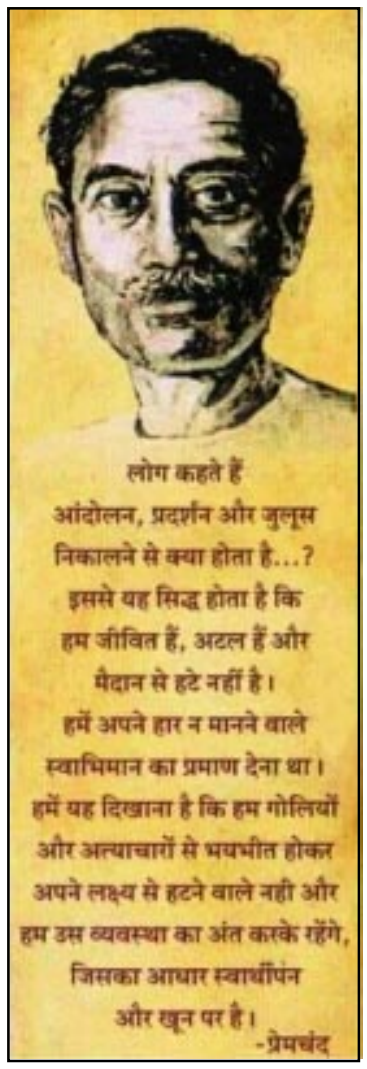
मन्दिरों के यह विधातागण नये युग की आवाज़ को नहीं सुन सकते। नये जमाने की जोरदार लहर के विरुद्ध खड़े होने में उन्हें सुख मिलता है, पर यह निश्चित है कि यदि उन्होंने यही क्रम रखा, यदि उनका यही हाल रहा तो वह दिन भी दूर नहीं है, जब कि नवीन युग की प्रचण्ड शक्ति उनके अस्तित्व को ही मिटा देगी। यदि उन्हें इस बात पर जरा भी सन्देह हो, तो वे अन्य देशों की ओर दृष्टिपात करें। वे यह ध्यान से देखें कि नये जमाने की लहर से दूर रहकर रूस के पुजारियों, महन्तों और धर्मगुरुओं ने क्या फल पाया। यह बात पुरानी नहीं है, कल की है। यह बात उन्हें एक भावी संकट सूचना दे रही है और उन्हें सावधान कर रही है। तिस पर भी यदि वे नहीं चेते, तो जो उनके भाग्य में लिखा है, सो तो होगा ही, किन्तु फिर उनके लिए कोई अवसर न रहेगा। सबसे अच्छा तो यह हो, कि वे अपने को सुधारें, नवीन युग के अनुकूल बनायें। इसी में उनका हित है, कल्याण है। समय की लहर बहुत बलवान होती है। बड़ी से बड़ी शक्ति द्वारा भी नहीं रोकी जा सकती। देश की दशा को भली-भांति देखते हुए, धर्म के आडम्बरों, उसकी रूढ़ियों और राक्षसी नियमों से मुक्त करके ही वे अपना, अपने धर्म का, अपने समाज तथा अपने देश का सबसे बड़ा हित कर सकेंगे और जनता के हृदयों में ऊँचा स्थान प्राप्त कर सकेंगे।